

आँख की किरकर आपरा साहित्य में मिनख रे मन री मांयली पुड़तां नै घणीं सावचेती सू उजागर करणैवाळा रवीन्द्र नाथ टैगोर सगळी विद्यावां में घणौं अर फूटरी लिख्यौ। आं री कहाणियां अर उपन्यास बंगाल री धरती रा मानखे रे हिये री अंकूअेक हलगल नै सावळ परगटे। इण उपन्यास री कथा-नायक आपरी लुगाई री हेजली घणीं अर दूजी कानी लाई-लागती री गुणवान, फूटरी पण विधवा रे घर में आयां प्रीत परवाण चढे। इयां औ हेत-प्रीत री तिरकोणीय संघर्ष री सांतरी उपन्यास घणीं घोळ-मथोळ सू आगि बढे। कथा नायक री विधवा मां अेक खानदानी रईस जर्मीदार री विधवा ओर नायक री विधवा काकी साथे ई रेवे। कलकत्ते में कोटी अर अठे री रईस घर री पण अनाथ लड़की सू ब्याव हुवे। ठेठ छोटा सा गांव री विधवा रिस्तेदार बहू कलकत्ते कोटी में आयां प्रीत परवाण चढे। टैगोर भारतीय संस्कृति रा मोल नै उंचो राखतां थकां देही रा मेळ बिना अखिर तांणी प्रेम नै पवित्र राख नै कथा आगे बघावे। महानगर अर ठेठ गांव रा दरसाव, मिनख रे मन री कमजोरियां, अमीर-गरीब रा भेद, रहण-सहण, रीत-रिवाज, बोल-वतळावण, काण-कायदा, मान-मरजादा इत्याद रे मिस इयां समझल्यौ के बंगाल री धरती री सांतरी सौम्य पसर्योड़ी निगह आवे। सेवट वात री सावळ निवेडी हुवे। अखिर में काकी अर गांव री वा विधवा कासीजी जावे। कथा नायक, इण री लुगाई पिरवार रा हितेसी अर नायक रा भायला साथे गरीब-गुरवां री सेवा वास्ते अस्पताळ वणबाय सेवा में लागणी तय करे। बूढी मां सगळा उतार-चढाव देख, सगळां नै अेक ठौड़ राजी-राजी देख सुरग सिधावे। राष्ट्रीय भावना सू गळगच टैगोर री साहित्य भारतीय संस्कृति अर बंगाल री दरपण केवोज सके। नाटकीयता रे पाण उपन्यास सरु सू अखिर तांणी जबरौ आकरसण बणावौ राखे।

रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941) साहित्य री सगळी विद्यावां में घणीं सांतरी अर खुब लिख्यौ अर टैगोर री गीतां री पोधी 'गीतांजलि' नॉबल पुरस्कार सू आदरीजी। भारतीय संस्कृति अर राष्ट्रीय भावना सू गळगच इणां री साहित्य आखे संसार में आपरी ठावी ठौड़ राखे। बंगाल री धरती री सौम्य अर वीं बगत रे मानखे री सगळी हलगल इणां रे साहित्य में मौजूद। जेड़ी बहुमुखी प्रतिभा सम्यन् साहित्यकार माये भारत नै गुमेज।

मनोहर सिंह राठौड़ 13 नवम्बर 1948 नै जलम्या कहाणीकार, नाटककार, कवि, संपादक अर अनुवादक मनोहर सिंह राठौड़ लारला 45 बरसां सू बरोबर लिखे। अब तांणी राजस्थानी अर हिंदी भासा में इणां री 57 पोथ्यां छप चुकी। केई पुरस्कार-सन्मान सू आदरीज्या श्री राठौड़ अवार जोधपुर बिराजे। सुतंत्र लेखन अर कला नै समरपित। केन्द्रीय सरकार री विद्यान री नेशनल लैब सीरी, पिलाणी (राज.) सू सेवा निव्रत।

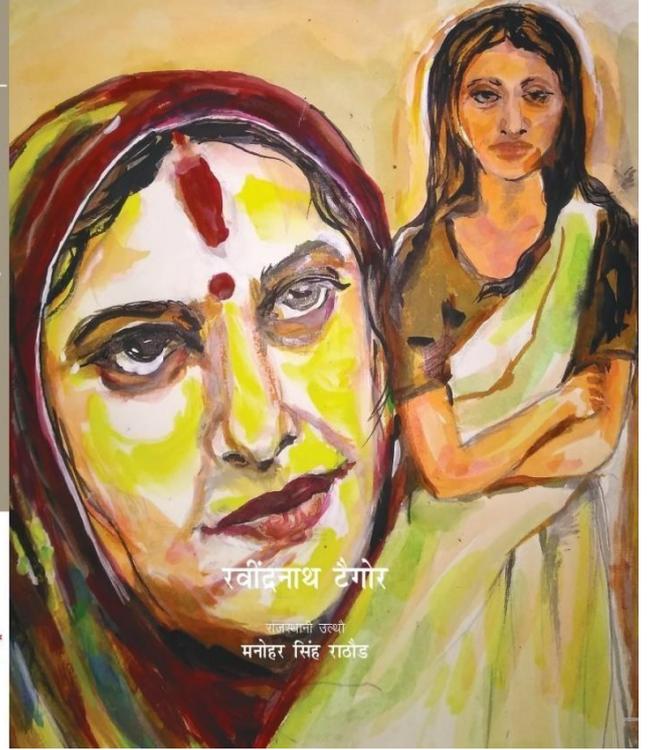
आँख की किरकर

रवींद्रनाथ टैगोर

बाख्ला उपन्यास



# आँख की किरकर



रवींद्रनाथ टैगोर

राजस्थानी उख्यौ  
मनोहर सिंह राठौड़



साहित्य अकादेमी



₹230

A Bengali (West Bengal) language book namely- **Aankh Ki Kirkiri** (Rabindranath Tagore's Bengali novel Binodini) by Rajasthani Tr. Manohar Singh Ratore was translated in Rajasthani language by Sahitya Akademi, New Delhi under EK Bharat Shreshtha Bharat. The book was published on 31<sup>st</sup> January, 2020.